❀ श्री हरि गुरु सच्चिदानन्दाय नमः ❀

* श्री मुक्ति-पथ-प्रकाश *

❀ लेखक ❀

श्री श्री १०८ श्री ब्रह्मनिष्ठ स्वामी गणेशरामजी महाराज के शिष्य

श्री स्वामी लाधूरामजी महाराज

श्री स्वामी हुकमरामजी महाराज की आज्ञा से लोकोपकारार्थ

श्री लाधूरामजी के परम शिष्य साधु खेतारामजी

ने छपवा के प्रकाशित किया।

सम्पादक (संशोधन कर्ता)

चि० श्री सन्त रामप्रकाशजी महाराज "वैष्णवरत्न"

श्री उत्तम आश्रम, कागारोड, जोधपुर (निवासी)

❀ प्रेरक ❀

श्री सन्त बखतरामजी महाराज

श्री गणेश आश्रम, रामद्वारा, पोकरण (निवासी)

संवत् २०१६ } प्रथमावृत्ति { प्रचारार्थ

सन् १९५९ } { मूल्य १)

सम्पादक की लेखनी से—

नम्र निवेदन वक्तव्य !

महोदय पाठक गणों के प्रति !

प्रस्तुत पुस्तिका छोटी होते हुए भी जन जिज्ञासू गण हेतु लोक कल्याण प्रद पथ प्रदर्शक है, क्योंकि इसके शब्द संकलन में लेखक ने अपनी भक्ति रस प्लावित वाणी का सुचारू ज्ञानोपदेश रूपक रहस्यवाद लक्षण निरूपण किया है। लेखक महोदय के निर्वाण पदार्पण पर यह वाणी स्वरचित हस्ताक्षरित रूपक में थी, यद्यपि जिज्ञासूजनों के आग्रह पर भी कई कारणों से प्रकाशित नहीं हो सकी थी, किन्तु आज परम पिता परमात्मा की असीम कृपा से लोकोपकारार्थ श्री लाधूरामजी महाराज के परम शिष्य साधू खेतारामजी ग्राम जेमला (जैसलमेर जिलान्तर्गत) निवासी ने छपवा के प्रकाशित की है, अत: सज्जन गण गुणों का अनुकरणित लाभ उठाकर के लेखक व सम्पादक–प्रकाशक के परिश्रम की सफलता साकार प्रदर्शित करें।

संत वाणी में काव्य चतुरता गणाऽगण का कुछ प्रयोजन नहीं है, वह विश्वोद्धारक निर्गुणजन्य परमानन्द को प्राप्ति कारक है। तुकान्त हो या इतिवृत्तात्मक पद्य, किन्तु कविजनों की दृष्टिवाद से कोटि गुणाऽधिक उच्चश्रेणी मय लोकालोक का कल्याण साधन है। इसमें यत्किंचन मात्र असावधानी से करेक्षण द्वारा वर्णाऽक्षर–मात्रा–शब्द का दृष्टि गत दोष सज्जन

सुधार के पढ़े । उक्त स्थानाऽभाव के कारण श्री हरि गुरू भक्त जिज्ञासू पाठकों से संक्षिप्त करबद्ध क्षमा चाहता हूँ ।

पुस्तक–विभाग
जोधपुर ११–१०-१६५६

विश्वहितेच्छु–सम्पादक
वि० सन्त रामप्रकाश "वैष्णवरत्न"

संवत् २०१६, कार्तिक वदि, १४ श्री दीपावली के उपलक्ष में !

पुस्तक प्राप्ति स्थान:—

(१) श्री सन्त बखतरामजी महाराज
श्री गणेश आश्रम (रामद्वारा)
रामपोल के बाहर, पोकरण
जि० जैसलमेर (राजस्थान)

(२) वि० श्री सन्त रामप्रकाशजी महाराज "वैष्णवरत्न"
श्री उत्तम आश्रम (वैष्णव निकेतन) रामद्वारा
नागौरी द्वार के बाहर, कागारोड, उत्तम चौक,
जोधपुर (राजस्थान)

मुद्रक–
लक्ष्मीनारायण देवड़ा
श्री भवानी प्रिंटिंग प्रेस,
घास-मंडी रोड, जोधपुर ।

श्री श्री १०८ श्री स्वामी लाधूरामजी महाराज कृत

❋ श्री मुक्ति-पथ-प्रकाश ❋

ग्रन्थ के भजनों की अनुक्रमणिका (सूची) प्रारंभ ।

श्री स्वामी गणेशरामजी महाराज के

परम शिष्य फरसरामजी कृत भजनों की सूची

श्री स्वामी लाधूरामजी महाराज के परम शिष्य

साधु खेतारामजी महाराज कृत

भजनों की पद्यानुक्रमणिका प्रारंभ।

इति श्री मुक्ति पथ प्रकाश की अनुक्रमणिका सम्पूर्णम्।

ईश्वर स्तुति (मंगलाचरण)

कृपा निधि नहिं जानूँ विधि कछु, जप तप नेम न प्रेम विचारा।
तीर्थ योग न भक्ति सनातन, ज्ञान न ध्यान न शील अचारा॥
कर्म उपासन बेद न आसन, विद्या मति नहीं कोई सुधारा।
"रामप्रकाश" अजानसभी विध, तूँ ही प्रभुअवतारण हारा॥१॥

उमाराम ब्रह्मनिष्ठ गुरू, गुणसागर मति धीर।
गणेशराम ता शिष्यजो, निश्चल ज्ञान गंभीर॥
निश्चल ज्ञान गंभीर, लाधूराम शिष्य जाके।
गुण यश गावूँ पूर, पार न आवे ताके॥
खेताराम शिष्य चरण में, कटी भ्रम भवपीर।
करूँ प्रणाम गुरूदेवजी, गुणसागर मति धीर॥ १॥

काशी के समान जान, पोकरण सु धाम मान।
गुरूदेव गणेशराम, सन्त अवतारी है॥
ताके शिष्य बींझाराम, ब्रह्मनिष्ठ ब्रह्म श्रोतिय।
सूरजराम ताहि शिष्य, पुरूषोराम कारी है॥
ताके शिष्य बखतराम, ज्ञानवान गुनखान।
जाय शर्णे शिष्य कोई, पाय मोक्ष बारी है।
करत प्रणाम शिष्य, आतम ही राम पद।
कीजे भव पार मोहि, भ्रम भेद टारी है॥ १॥

समर्पण

परम पुज्य सत गुरूदेव श्री श्री १०८

श्री स्वामी लाधूरामजी महाराज

जो कि इस असार संसार को त्याग कर निर्वाणपदासीनस्थ सच्चिदानन्द स्वरूप है जिनकी कृपा से जीवन पथ प्रदर्शित सफलित हुआ ।

तथा

श्री १०८ श्री स्वामी हुकमारामजी महाराज

के

पवित्र चरण कमलों में

सादर समर्पित पुष्पाञ्जली

स्वीकृत हो ।

चरणानुचर

साधु खेताराम

श्री गणेश आश्रम, पोकरण (राजस्थान)

श्री स्वामी हुकमारामजी महाराज की आज्ञा से लोकोपकारार्थ श्री लाधूरामजी महाराज के परम शिष्य साधू खेतारामजी महाराज ने छपवा के प्रकाशित किया ।
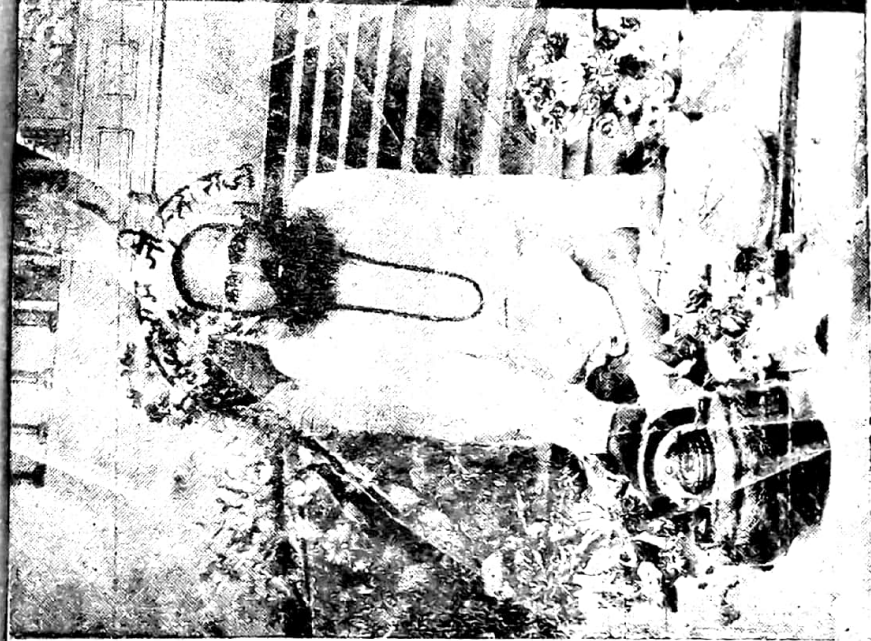
शिष्य खेतारामजी

श्री स्वामी लाधूरामजी महाराज

❀ श्री हरि गुरू सच्चिदानन्दाय नमः ❀

श्री स्वामी लाधूरामजी महाराज कृत

* श्री मुक्ति-पथ-प्रकाश *

* प्रारम्भ *

भजन संख्या (१) राग नट कल्याण पद।

सिमरूँ देवे गणपति भगवाना,
जासे पाय सर्व सुख ज्ञाना ॥ टेर ॥
सुर नर असुर सब कोई ध्यावे,
अनन्त सन्त गण शोभा गावे।
अष्ट सिद्धी नवनिद्धि निधाना ॥ १ ॥
सन्त सुधारण तारण हारा, महिमा अगम अपार अपारा।
सर्व विद्या गुण ज्ञाता महाना ॥ २ ॥
दुष्ट संहारण-सर्व सुख दाता, रिपु कामादिक मूल मिटाता।
सब सुख तुमरे शरण बखाना ॥ ३ ॥
गणपति स्वामी सकल में व्यापक,
ज्ञान ध्यान गण गुण के नायक।
"लाधूराम" के सर्वस्व सुजाना ॥४॥

भजन संख्या (२) राग नट कल्याण पद।

सत गुरू श्याम बड़ा अवतारी,
ज्ञान ध्यान गुणवर भण्डारी ।।टेर।।
सत गुरू वपु परमार्थ धारी,
शिष्य जिज्ञासू तुरन्त उभारी ।। १ ।।
जीव अज्ञान भ्रम भय टारी,
ज्ञान लखाय करे भव पारी ।। २ ।।
पामर जीव जनम गया हारी,
वेमुख नुगरा नर्क मंझारी ।। ३ ।।
संत दयाल परम उपकारी,
कर उपकार विकार विडारी ।। ४ ।।
"लाधूराम" गुरू की बलिहारी,
सत गुरू स्वामी अरज हमारी ।। ५ ।।

भजन संख्या (३) राग नट कल्याण पद।

आरती कर कर संत बधाया, हर्ष हेत से मंगल गाया ।।टेर।।
सतगुरू आया सूता जगाया,
प्याला ज्ञान युक्ति से पाया ।। १ ।।

पीवत दोष दुर्मति को नसाया,
हेर घेर घर सुमति लाया ।। २ ।।
सुमति प्रेम पीया से लगाया,
सतगुरू चरणे शरण समाया ।। ३ ।।
"गणेशराम" गुरू ज्ञान लखाया,
लाधूराम परमानन्द पाया ।। ४ ।।

भजन संख्या (४) राग श्याम कल्याण पद।

गुरू गम आरती गोविन्द गुण गाया।
सत गुरू स्वामी सत्य लखाया ।। टेर ।।
गुरू का शब्द सदा ही सवाया,
स्मरण करके सत में समाया ।। १ ।।
रोम रोम में राम रहाया,
नित निरन्तर दर्शण पाया ।। २ ।।
भवसागर भ्रम काट भगाया,
सत्य स्वरूप सत सो दरशाया ।। ३ ।।
"गणेशराम" गुरू अलख अजाया,
"लाधूराम" अद्वैत अथाया ।। ४ ।।

भजन संख्या (५) राग देश बधावा पद।

गुरूजी मुझे तारण आया ए,

तारण आया ए बधाया ए ॥ टेर ॥

कंचन थाल संजोवियो, संत बधावण जाया ए ॥१॥

माणक मोती झिल मिल ज्योति, प्रेम का पुष्प चढाया ए ।२।

अनंत जन्म का भूला प्राणी, सूता जीव जगाया ए ॥३॥

भवसागर सूँ तारण आया, ज्ञान जहाज चढाया ए ॥४॥

'लाधूराम' संतन को चेरों, गुरू चरणे चित लाया ए ॥५॥

भजन संख्या (६) राग देश बधावा पद।

समरथ हरि आप पधारया ए,

पधारया ए पग धारया ए ॥टेर॥

सत गुरू आया दरशण पाया,

शंस्य शोक मिटाया ए ॥ १ ॥

अनंत संतों को गुरू कारज कीनों,

शरण आया को सुधारया ए ॥ २ ॥

शरण आवे सर्व सुख पावे,

उत्तम शिष्य उधारया ए ॥ ३ ॥

मेरो भवन अब सुन्दर लागे,

तिगुण ताप निवारया ए ॥ ४ ॥

"गणपत" गुरूजी मुक्ति का दाता,

"लाधूराम" गुण गाया ए ॥ ५ ॥

भजन संख्या (७) राग देश बधावा पद।

परम गुरू पर उपकारी ए, उपकारी ए गुण धारी ए ॥टेर॥

कर कृपा गुरू दर्शन देकर, पूर्व प्रीत संभारी ए ॥ १ ॥

संचित-क्रिया कर्म दूर मिटाया, सत आतम दृढारी ए ॥२॥

शील शंतोष साधन कर शस्त्र, दुर्जन विकार विडारी ए ।३।

'गणेशराम' गुरू सत ब्रह्मज्ञानी, लाधूराम सुखारी ए ।४।

भजन संख्या (८) रागआशा-आशावरी-टोडी पद।

साधो भाई ! संगत मिल्यों सुख थाई।

सतगुरू वचन वेद का वाक्य, अनंत संत यूँ गाई ॥टेर॥

सतगुरू शब्द सुणायो मुझको, सतसंग सत दरशाई।

जगत जाल कों झूँठ पिछाण्या,

कर सतसंग पत आई ॥ १ ॥

पांच पचीस को प्रत्यक्ष विडारया, सर्व उपाधि विलाई ।
त्रिगुण नाना खेल पसारा, न्यारा निर्गुण गोसांई ॥ २ ॥
सतसंगत में नहिं त्रिगुण अंका, सत निर्णय कर पाई ।
सत को धार असत को त्याग्या, सतगुरू की गम लाई ।३।
'गणेशराम' सतगुरू सतज्ञानी, युक्ति सत परसाई ।
'लाधूराम' शरण सतगुरू की, दुतिया भ्रम मिटाई ॥४॥

भजन संख्या (९) राग आशा–टोडी आशावरी पद ।

साधो भाई ! सतगुरू से पत आई ।
कृपा दृष्टि कर मो पर पूर्ण, ध्यान युक्ति दरसाई ॥ टेर ॥
समरथ सतगुरू शंस्य काढ्यो, सत की रमभ लखाई ।
सोहं भेद दियो गुरू स्वामी, हृदय ठीक ठहराई ॥ १ ॥
नाभी बैठ साधना सारी, भीणी तार संभाई ।
उलटा पवन पश्चिम को फेरया, प्राण अपान मिलाई ॥२॥
पांचो शमकर सहजे सहजे, बंक नाल उलटाई ।
प्राणायाम पवन गति जाणी, युगति कर उर लाई ॥३॥

त्रिवेणी ध्यान कर योग पिछाण्या, गुरू कृपा गम पाई ।
आठ पहर घन दामनि चमके, दीप माल सुखदाई ॥४॥
गगन मण्डल में अनहद बाजे, निर्भय अवाज घुराई ।
अखण्ड ज्योति का होय उजाला, निर्भय निश्चल थाई ।५।
टूटा तिमिर भानु दरशाया, संकल्प रहा ना काई ।
दशो दिशा सत पूर्ण दरशे, सत आत्म परसाई ॥६॥
साचा संत निज पद को पावे, पक्षवादी नहिं जाई ।
"लाधूराम" एकता जाणी, ब्रह्म अद्वैत अचाई ॥७॥

भजन संख्या (१०) राग हेली–राजेश्वरी पद ।

भला मिल्या दिन आजका, हुवा आनन्द सत खास ॥टेर॥
दर्शण की आशा लगी, अनंत जनम की प्यास ।
सोहं जड़ी पिलाय के, काटी त्रिगुण त्रास ॥ १ ॥
ज्ञान घटा घन लायके, इन्द्र समान वरास ।
वचन बूंद वर्षा करी, मेघ मलार प्रकाश ॥ २ ॥
गुरू दाता की चरण रज, लीवी शीश सुरास ।
संचित कर्म सो टल गया, आई ज्ञान सुवास ॥ ३ ॥

साचा शिष्य सत सूधरे, तन मन भेंट कर जास ।
मोक्ष निजानन्द फल लहै, साचा करे हुलास ॥ ४ ॥
सतगुरू सा नहिं जगत में, दृश्य माया विलास ।
'लाधूराम' गुरू महरते, आप लख्या अविनाश ॥ ५ ॥

भजन संख्या (११) राग राजेश्वरी हेली पद ।

हेली ए ! स्मरण कर सुख पाविया,
गुरू चरणे चित लाया ॥ टेर ॥
शब्द नगारा ज्ञान का, हरदम संत बजाय ।
साचा जिज्ञासु नित सुने, मन तन भेंट चढाया ॥ १ ॥
ज्ञान ध्यान गति लायके, हरदम साधन पाय ।
पांचूँ वश कर पद लहे, परमानन्द अधिकाय ॥ २ ॥
योग गति चीन्ही सभी, प्राणायाम करवाय ।
त्रिकुटी तख्त में सुणत नित, अनहद राग घुराय ॥ ३ ॥
सोहं रति गति ज्ञान की, गुरू कृपा उरलाय ।
गुरू "गणपति" साचा मिला, लाधूराम यश गाय ॥ ४ ॥

भजन संख्या (१२) राग राजेश्वरी हेली पद ।

संत समागम कीजिये, और उपाधि विसार ॥ टेर ॥
स्वास उश्वासे स्मरण कर, इला पिंगला सार ।
पूरक कुम्भक चेत के, रेचक पवन उतार ॥ १ ॥
शोड्ष पूरक पूरके, चौंसठ कुम्भक धार ।
ॐ शब्द उर लायके, चौंसठ रेचक उचार ॥ २ ॥
वाहन बिन अरहट्ट चले, शहस्र घड़नालों पार ।
मणि माल दर्शित रहे, चन्द सूर इकसार ॥ ३ ॥
जोग जुगत सूँ जोयके, सतसंग करो उदार ।
सोहं स्मरण हर दम सही, अपना आप दीदार ॥ ४ ॥
सुख सागर की सीर में, द्वैत भ्रम सब टार ।
"लाधूराम" निर्भय भया, आवागमन विडार ॥ ५ ॥

भजन संख्या (१३) राग हेली–राजेश्वरी पद ।

जगत जाल को छोड़ के, होवो भव से पार ॥ टेर ॥
गर्भ वचन सब भूल के, फंस्यो माया की धार ।
धन्धा फन्दा जगत का, कर्म भ्रम शिर भार ॥ १ ॥

मोह जाल गहरो महा, भव सागर की कार ।

सतगुरू की युगति लखा, सब ही जाल विडार ॥ २ ॥

उत्तम सतगुरू शरण में, पावे ज्ञान उदार ।

साधन कर चित लायके, श्रधा तपस्या सार ॥ ३ ॥

संत बाणी सत वेद में, साची समझ विचार ।

भजन कीये भव पार है, हरि स्मरण ततसार ॥ ४ ॥

सतगुरू दाता नाम का, सत उपदेश पुकार ।

"लाधूराम" गुरू शरण में, निश्चय हो विस्तार ॥ ५ ॥

भजन संख्या (१४) राग काफी छन्द डेढुवा पद ।

प्रभू आये बिन मैं दुखियारी ।

मोहन मोघर आसी, जब सुखथासी ॥ टेर ॥

अगनी अन्दर ब्रह की जागी, मेरी प्रीत गुरू से लागी ।

प्रेम बूँदों वरषासी, जब सुख थासी ॥ १ ॥

निशि दिन ऊभी पन्थ निहारूँ, तन मन मेरो हरि पर वारूँ ।

जग सूँ रहूं उदासी, जब सुख थासी ॥ २ ॥

अन्दर दरद कोई नहिं जाणे, जो जाणे से आप पिछाणे ।

ज्ञान की घूंट पिलासी, जब सुख थासी ॥ ३ ॥

"लाधूराम" कहे सब सुण लीजो,
सहजे भजन गुरू को कीजो ।

जनम सफल हो जासी, जब सुख थासी ॥ ४ ॥

भजन संख्या (१५) राग काफी डेढुवा पद ।

प्रेम बिना प्रीतम नहिं मिलसी ।

गुरू सूरत बलिहारी, सुरता प्यारी ॥ टेर ॥

बड़ा भाग मानुष तन पाया, भवसागर सें बाहर आया ।

जल्दी कर हुसियारी, सुरता प्यारी ॥ १ ॥

सत संगत सागर में न्हावो, वृथा क्यूँ ? नर जन्म गमावो ।

भवतरणे की वारी, सुरता प्यारी ॥ २ ॥

तिरते देर कछू नहिं लागे, साचो प्रेम सतगुरू से जागे ।

करता संत पुकारी, सुरता प्यारी ॥ ३ ॥

"लाधूराम" गुरू वचने लागा, सहजे टूटा भ्रम का तागा ।

निर्भय नाम उचारी, सुरता प्यारी ॥ ४ ॥

भजन संख्या (१६) राग काफी, डेढवा पद।

पूर्व प्रीत दया कर पाली। निर्मल नाम सुणाया,
नूर सवाया ॥ टेर ॥
घट मे काम क्रोधादिक खोटा,
गुरू ने दीया ज्ञान का दोटा।
शील शंतोष सजाया, नूर सवाया ॥ १ ॥
गुरूज्ञान का डंका दीना, नाभ कँवल सूं स्मरण कीना।
बंकनाल उलटाया, नूर सवाया ॥ २ ॥
इडा पिंगला सुखमण नारी, पूरक कुम्भक लागी तारी।
त्रिवेणी जोत जगाया, नूर सवाया ॥ ३ ॥
ज्ञान ध्यान गम बाण सु लागा,
वैरी संग सकल कुल भागा।
पांच पचीस मिटाया, नूर सवाया ॥ ४ ॥
चेतन पुरुष की फिरी दुहाई, रोम राम जागीरी थाई।
असल मुदे पर आया, नूर सवाया ॥ ५ ॥
सब घट एक अखंड उजाला, निर्भय हंसा आप अकाला।
जनम मरण नहिं आया, नूर सवाया ॥ ६ ॥

"लाधूराम" निर्भय पद योई, विरला हरिजन जाणे कोई।
सतगुरू माहिं समाया, नूर सवाया ॥ ७ ॥

भजन संख्या (१७) राग काफी छन्द डेढुवा पद।

सतगुरू मेरा अन्तर्यामी।
राम नाम धन दीना, स्मरण कीना ॥ टेर ॥
सनकादिक सतगुरू को ध्यावे,
महिमा महा वरणी नहिं जावे।
दृष्टि न आय वो भीना, स्मरण कीना ॥ १ ॥
षट् चक्कर का भेद बताया, स्वासोऽस्वास सोहं धुनि लाया।
निर्भय सुधारस पीना, स्मरण कीना ॥ २ ॥
सुन शिखर में सहज समाई, सुरता-श्याम अद्वैत अथाई।
युगति मुक्ति पद चीना, स्मरण कीना ॥ ३ ॥
सतगुरू ज्ञानी सनातन सागी,
ऊगा भाण अखंड लिव लागी।
दशवें दर्शन दीना, स्मरण कीना ॥ ४ ॥
"लाधूराम" निर्भय पद पाया, सतगुरू पूरा भेद बताया।
माग मुक्ति का लीना, स्मरण कीना ॥ ५ ॥

भजन संख्या (१८) राग काफी डेढुवा पद।

राम नाम को पट्टो लखायो।

दीवी मुक्ति निशानी, सतगुरू दानी ॥ टेर ॥

श्रवण सुणया सतगरू का वायक,

वेद शास्त्र गुण सब का लायक।

हृदय ठीक ठहरानी, सत गुरू दानी ॥ १ ॥

महावाक्य सत शब्द सुणायो, तत्वं असि ब्रह्म लखायो।

त्रिगुण भाव पहिचानी, सतगुरू दानी ॥ २ ॥

तीन लोक पर डंका बाजे, कायर सुण कर सब ही भाजे।

शूरा रमझ पिछानी, सतगुरू दानी ॥ ३ ॥

"लाधूराम" कहै सतगुरू शूरा,

विरह बाण मारया उर पूरा।

भई गुण दृश्य जग हानी, सतगुरू दानी ॥ ४ ॥

भजन संख्या (१९) राग काफी, डेढवा पद।

एक ब्रह्म सत सब में व्यापक।

एसी रमझ लखाई, कही ना जाई ॥ टेर ॥

बाजीगर बहु खिलको कीनो, बिना भेद साचो कर लीनो।

खिलका ख्याली रचाई, कही ना जाई ॥ १ ॥

नभ ज्यूँ व्यापक पूर्ण सारा, एक चेतन का सकल पसारा

कारज कारण माई, कही ना जाई ॥ २ ॥

चेतन एक रस जाणणहारा, सब में सता रहे निरधारा।

वायक लगे नहिं काई, कही न जाई ॥ ३ ॥

"गणेशराम" गुरू अचल अडोला,

"लाधूराम" निज ज्ञान अबोला।

ज्योति में ज्योति रलाई, कही ना जाई ॥ ४ ॥

भजन संख्या (२०) राग काफी, डेढुवा पद।

बिन चेत्यों चौरासी भोगो।

जनम जात है हारो, नाम संभारो ॥ टेर ॥

जम जालिम जोरावर पूरा, जासे डरता तनधर शूरा।

ताको मार विडारो, नाम संभारो ॥ १ ॥

नर सुर असुर सर्व को खाया,

यम के बल का अन्त न आया।

जो रहयो नाम से न्यारो, नाम संभारो ॥ २ ॥

अन्त समय सब ही दुःख पावे,

गुरू बिना तोहि कौन ? छुड़ावे।

लीयो न शब्द सहारो, नाम संभारो ॥ ३ ॥

सतगुरू श्याम मुक्ति का दाता,

भव सागर का काट्या नाता।

"लाधूराम" विचारो, नाम संभारो ॥ ४ ॥

भजन संख्या (२१) राग मंगल प्यारी पद ।

प्यारी ए ! भई सुहागण नार, नहिं दुहाग है ।
जीवत जाल्यो प्राण, विरह की आग है ॥ १ ॥

दृढ कर आसन मार, टारयो भव नाग है ।
सतगुरू मिल्या सुजाण, माया जग त्याग है ॥ २ ॥

बाजे अनहद तूर, छतीसूं राग है ।
सतगुरू पकड़ी बांह, जाग्यो धन भाग है ॥ ३ ॥

सतगुरू बड़ा सुजाण, सत से अनुराग है ।
यूँ कहै "लाधूराम" सदा सत सुहाग है ॥ ४ ॥

भजन संख्या (२२) राग मंगल, प्यारी पद ।

प्यारी ए ! पिया मिलण को चाव, मेरे दिन रात है ।
किस को पूछूँ बात, कही नहिं जात है ॥ १ ॥

सन्तन से चित लाय, सेवा करो तात है ।
कूँची उनके पास, सब ही दरशात है ॥ २ ॥

अन्तर्यामी आप, पूछे सब कुशलात है ।
साचो दे उपदेश, काटे भ्रम भ्रान्त है ॥ ३ ॥

अगम पुरी के बीच, पीयाजी रहात है ।
गीता वेद पुराण, बाणी सब गात है ॥ ४ ॥

अचल अखण्ड अतोल, अनादू अगात है ।
"लाधूराम" निज देश, नाम रूप नहीं जात है ॥ ५ ॥

भजन संख्या (२३) राग मंगल, प्यारी पद

प्यारी ए ! नर संग लागी नार, पिया से प्यार है ।
रूप दीयो रघूनाथ, साधन कर शृँगार है ॥ १ ॥

कर शृँगार स्वरूप, चली बाजार है ।
निरख्यो रूप अरूप, दीयो दीदार है ॥ २ ॥

मिल्यो पूर्व को संग, सर्व दुःख टार है।
अक्षय वृक्ष की छाय, पायो भरतार है ॥ ३ ॥
'गणेशराम' गुरूदेव, लखावत सार है।
'लाधूराम' गुरू ओट, चरण बलिहार है ॥ ४ ॥

भजन संख्या (२४) राग सोरठ पद।

फकीरी ! फकर फिकर से बार।
तिगुण तापकी तजी वासना, ले सतगुरू की सार ॥टेर॥
त्रिगुण भाव लोकत्रय कहिये, यह सब झूँठ पसार।
काम क्रोध बली बहु योद्धा, चाले मन की लार ॥१॥
मन का संगी बली सब थाका, लागी शब्द कटार।
कलह कल्पना कुब्दों भागी, मन को भयो सुधार ॥२॥
तीन लोक का मन अभिमानी, भोगे बहुत विकार।
साचा सैल पूगा सतगुरु का, त्याग वैराग दोय धार ॥३॥
गणपत साहब फकर महा शूरा, चेत चेतावण हार।
'लाधूराम' को अपनो कर लीनो, पूर्व प्रीत संभार ॥४॥

भजन संख्या (२५) राग सोरठ पद।

फकीरी ! जाज्ञा पूर्व का भाग।
जाज्ञा भाग मिल्या गुरु पूरा, गुरु चरणे चितलाग ॥टेर॥
संचित क्रिये अनंत जनम का, लागी विरह की आग।
प्रेम पवन की लहरां आवे, दिन दिन दूणी जाग ॥१॥
तिवर पुण्य करी पुरुषार्थ, सतगुरु पाय सुहाग।
अज्ञान अंधेरो दूर उड़ायो, मिल्यो मुक्त को माग ॥२॥
गुरु का राज सभी के ऊपर, होवे अनहद राग।
अगम धाम की पाई जागीरी, सर्व उपाधी त्याग ॥३॥
सतगुरु पूरण ब्रह्म अनादि, नहीं कोई थाग अथाग।
'लाधूराम' पूरण पद परस्या, आठ पहर अनूराग ॥४॥

भजन संख्या (२६) राग सोरठ ताल धीमा काफी पद।

मन छोड़ो मान बड़ाई, मैं कहूँ हकीकत ताई ॥ टेर ॥
हिरणाकुश थो बलदाई, ता जग में फिरी दुहाई।
कर राम नाम कीअटकी,पर अन्तमरयोमन हटकी ॥ १ ॥

रावण बड़ा अभिमानी, नहीं कही सुनी कुछ मानी ।
अन्त समय दुःख पाया, मन फेर पीछे पछुताया ॥ २ ॥
दुर्योधन धूम मचाई, कर कोटि अनीति चलाई ।
कपट जाल कर हारा, ता अन्त भीम ने मारा ॥ ३ ॥
नहीं दोष और को भाई, यहीं हाथों कुमति कमाई ।
जिन गर्भ कीयावह हारा, अन्तभयाकालका चारा ॥ ४ ॥
सत कहै हरिजन सारा, नित सुणत जिज्ञासू प्यारा ।
"लाधूराम" उर धारा, जन भवसागर भया पारा ॥ ५ ॥

भजन संख्या (२७) राग सोरठ ताल धीमा काफी पद ।

सत राम भजे सुख थाई, पद जीव अमर पुर पाई ॥टेर॥
प्रहलाद ने राम पुकार्या, हरि आप संकट सब टार्या ।
सत नृसिंह रूप बण आया, हिरणाकुश मार गिराया ॥१॥
शिबरी राम की दासी, हरि काटी यम भव फासी ।
फल झूँठा रामने खाया, जिसफलसेलछमणजीवाया ॥२॥
थी गणिका अवगुण भण्डारी, अघ पाप ताप की क्यारी ।
कर प्रीत राम गुण गायो, अन्तस्वर्गसींहासनआयो ॥ ३ ॥
राम नाम धन खानी, हरि भक्त परमानन्द जानी ।
सतगुरू महर ते पाया, हरि "लाधूराम" यश गाया ॥४॥

भजन संख्या (२८) राग सारंग पद मलार झंझोटी ।

सखीरी मेरे ! लागो विरह को तीर ॥ टेर ॥
भई वैरागण वनवन विचरूँ, सुख दुःखसहत शरीर ॥१॥
दर्शण बिना दासी दुःख पावे, कबमिलसी यदूवीर ॥२॥
छण छण मैं मुझ विरह सतावे, नेनौमें चालत नीर ॥३॥
"लाधूराम" को दर्शन दीजो, हृदय धरे नहिं धीर ॥४॥

भजन संख्या (२९) राग झंझोटी, मलार पद ।

साँवरिया बिना ! लागे बिरंगो देश ॥ टेर ॥
निशिदिन तलफूँ नींद न आवे, विलखीफिरूँ हमेश ॥१॥
विरह की मारी भई दुखियारी, नहीं जाने कोई रेश ॥२॥
जोगण होकर सब जग ढूंढ्या, कर कर छूटा केश ॥३॥
"लाधूराम" की सुणो विनती, समरथ गुरू गणेश ॥४॥

भजन संख्या (३०) राग झंझोटी, मलार पद ।

माईरी मेरो ! पीया बसे परदेश ॥ टेर ॥
विरह भाव की चिट्ठी भेजूं, कैसे पाऊं शंदेस ॥ १ ॥
कैसे लिखूं हृदय घन हुलसे तनमन, से आदेश ॥ २ ॥

सत गुरू बिना कछुनसुहावे, भटक फिरीसब देश ॥ ३ ॥
"लाधूराम" पीया घर आवो, कृपा करो गणेश ॥ ४ ॥

भजन संख्या (३१) राग सोरठा पद संगीत।

सतगुरू दीन दयाल हो।
दीनानाथ दया के स्वामी, कर कृपा मोही भाला हो ॥टेर॥
गुरूदाता की महिमा भारी, काटे कर्म कराला हो।
ऊंच नीच पर रहे इकसारा, तोड़े भ्रम का ताला हो ॥१॥
मन वच शीश धरे गुरू आगे, जाका गुरू रखवाला हो।
रत्ता करके दीन जनों को, देवे नाम निराला हो ॥२॥
नाम जपे सोई बड़ भागी, दुतिया दुर्मति टाला हो।
गुरू की महर करी पुरूषार्थ, फेरी सोहं माला हो ॥३॥
"गणपत" साहिबसकलगतव्यापक, कृपा दृष्टी वाला हो।
"लाधूराम"अखण्ड धुनलागी, हुआआपमतवाला हो॥४॥

भजन संख्या (३२) राग सोरठा पद संगीत।

रमझ गुरू की पाई हो।
पाई सैन संश्य सब टूटा, महिमावरणी न जाई हो ॥टेर॥
हरदम नाम बसे दिल अन्दर, गुरू मिले गम आई हो।

स्वास उस्वास सहजकास्मरण, चरण कमल चितलाई हो॥१॥
चेतन होय दशोदिश देखा, निशि दिन कला सुहाई हो।
निरख्या नाथ अलख अविनाशी,
अटल जागीरी थाई हो ॥ २ ॥
अटल पुरूष का मार्ग बंका, दृष्ट मुष्ट नहिं काई हो।
आश्रमवर्णनहिंकोई फन्दा, सहज स्वरूप रहाई हो ॥ ३ ॥
श्याम मनोहर समरथ पाया, क्रिया सर्व विलाई हो।
"लाधूराम" सहज घर पाया,
रमझ लखी घट मांई हो ॥ ४ ॥

भजन संख्या (३३) राग बरहंस ताल धमाल पद।

गुरूजी मैं शरण तुमरे आयो,लेवो वेगशुद्धि सायो ॥टेर॥
अनंत जन्म मैं बहुत दुःख भोग्यो, डरकर शीश नमायो।
दीनानाथ दया कर मोपर, भव से पार पठायो ॥ १ ॥
सतगुरू स्वामी अन्तर्यामी, शब्द प्यालो भर पायो।
अनादी रोग कर्मन को सो, चण में मूल मिटायो ॥ २ ॥
संचित कर्म जल्या विरह अग्नि, भ्रांति भेद विलायो।
पुण्य तिव्र संग प्रारब्ध प्रगट्या, देवदीदार दिखायो ॥३॥

समर्थ गुरू "गणपत" मेरा, पूरण पद दरशायो ।
"लाधूराम" शरण सतगुरू की,
चरण में शीश नमायो ॥ ४ ॥

भजन संख्या (३४) राग बरहंस ताल धमाल पद ।

सतगुरू के दर्शण की मैं बलिहारी,
में पलक पलक जाऊँ वारी ॥ टेर ॥
अनंत कोटि रोम की शोभा, महिमा अगम अपारी ।
गुरू महिमा कोअंत न आवे अगमनिगम कथ हारी ॥१॥
स्वर्ग में सुरपति सब सिमरे, भूमि पे नर रू नारी ।
शैंषजी पाताल वासी, जिभ्या दोय हजारी ॥ २ ॥
चिंटी कुँजर सर्व में व्यापक, सब की कर रखुवारी ।
शंस्य शोक काट सब जीका, परम पद के सुखकारी ॥३॥
"गणेशराम" गुरु सत स्वरुपी, सर्व का सिरजण हारी ।
'लाधूराम' सतगुरु के शरणे,
साधन संग निज दीदारी ॥ ४ ॥

भजन संख्या (३५) राग सोरठ पद ।

मत अभिमान करो मन म्हारा,
मदके संग युगोयुग नर हारा ॥ टेर ॥
लंका पुरी दशकंध राजा,निर्भयजगजीत बाजे बाजा ॥१॥

कंचन कोट हीरा नग जड़िया,
अन्त समय सब रहा धरिया ॥ २ ॥
वितल में रहा नरांतक गाया,
शोड़ष योजन कोट बणाया ॥ ३ ॥
नहिं जिन राम शुक्रत गायो,
कर अभिमान कुल वंश कटायो ॥ ४ ॥
'लाधूराम' कहै भजलो भाई,
राम न सुमरे राम दुहाई ॥ ५ ॥

भजन संख्या (३६) रागप्रभाती राम गिरि पद।

समर्थ अर्ज सुणो गुरु मेरी, आर्तकरत पुकारी रे ॥ टेर ॥
मंझारी का बाल भूल में, चहूँ दिश अग्नि जारी रे ।
ज्वाला जलत उभारा तुमने,
सिरीया दे भक्ति सुधारी ॥ १ ॥
मेंगल संकट पड़यो बहु भारी, नेक कृष्ण की बारी रे ।
प्यादा होकर चक्कर चलाया,
छोड़ी गरूड़ असवारी ॥ २ ॥
पाण्डव पति बीच सभा के, दुशासन चीर उतारी रे ।
अन्तर्यामी प्रभू छल को काटे,
बाढ्यो चीर अपारी रे ॥ ३ ॥

अनंत जीव उधारया छण में, महिमा अपार उचारी रे।
साचों शीश दीयो सत गुरू कूँ,
जाकी करी रखुवारी रे ॥ ४ ॥

आर्त अनाथ की अर्ज सुणी है, मोहका फन्द विडारी रे।
'लाधूराम' को दर्शण दीना,
तुरन्त कीया भव पारी रे ॥ ५ ॥

भजन संख्या (३७) राग प्रभाती पद।

सत गुरू सुणी हमारी अरजी,
भुजा पकड़ भव तारा रे ॥ टेर ॥

भवसागर का वार न पारा, अथाह अपार जल धारा रे।
सत संग जहाज रू संत केवटिया,
पल में भया भव पारा रे ॥ १ ॥

नाम जहाज चढे कोई शूरा, तुरन्त निर्भय पद तयारा रे।
पामर जीव कल्पना करके,
डूबा भ्रम विस्तारा रे ॥ २ ॥

सतगुरु बिना नाहीं सुधारो, कोटिक करो विचारा रे।
गुरु की दया महर सन्तन की,
भागा भ्रम अँधारा रे ॥ ३ ॥

नाम निशान दीया सतगुरुजी, साचा शब्द उचारा रे।
पांच पचीस बली सब थाका,
महरम भेद निहारा रे ॥ ४ ॥

'लाधूराम' को निश्चय थाया, एक ब्रह्म अविकारा रे।
पूर्णब्रह्म पूरागुरु पाया, अचल अगोचर न्यारा रे ॥५॥

भजन संख्या (३८) राग कानड़ा, चौपाई पद।

सतगुरू दयाल सकल का दाता,
भव का भेय विकार मिटाता ॥टेर॥

भवसागर अति भ्रम भय भारी, जामे पड़िया नर अरु नारी।
सत गुरू नाम बिना दुःख पावे,
पक्षपात कर पन्थ चलावे ॥ १ ॥

पन्थवादी साधू नहीं होई, तर्क वाद पाखण्ड कर कोई।
परमात्म सत पूरण प्रकाशी,
द्वैत मिटे बिन ज्ञान न थासी ॥२॥

जैसे रवि घट मठ में भासे, सनमुख रहया तिमिर सब नासे।
त्यूँ सतगुरू सत राम लखावे,
जीव शीव का भेद मिटावे ॥ ३ ॥

"गणेशराम" गुरू ज्ञान लखाया, अपना ब्रह्म आप दरसाया।
"लाधूराम" शरण सुख पाई,
सत में सत रहा सु समाई ॥ ४ ॥

भजन संख्या (३९) राग कानड़ा चौपाई पद।

सतसंग में सब तर जावे,
ऊँचरू नीच भेद नहीं लावे ॥टेर॥
सतसंगत अमृत की धारा, साच जिज्ञासु उर में धारा।
चन्द्र चकोर ज्यूँ प्रीति सागे,
अग्नि भक्षण कर ताप न लागे ॥१॥
सतसंग पारस की वर खानी, जन परसी सत निश्चय जानी।
विषय विकार सभी हर लेवे,
जोजन प्रीत श्रधा कर सेवे ॥२॥
सतसंगत महिमा अतिभारी, वेदपुराण संत कथ हारी।
अकथ अमाप-थाग नहीं आवे,
सहसानन से फणीपत गावे ॥३॥
संत अनंत सतसंग से तरिया, अनंत जीवों का कारज सरिया।
"लाधूराम" गुरू की बलिहारी,
कर सतसंग भये, भव पारी ॥ ४ ॥

भजन संख्या (४०) राग सोरठ सारंग, मलहार पद।

पीया घर आवो मेरे घणो उमावो,
वर्षे बादल सुख पड़ियाँ ॥ टेर ॥
पीया बिना मोहीं कछू न सुहावे,
बीते दुख से सब घड़ियाँ ॥ १ ॥
अनहद बाजे चातक मोरा,
मधुर बोल हर मन कड़ियाँ ॥ २ ॥
गगन मण्डल घन दामनि चमके,
अमृत लागी नित झड़ियाँ ॥ ३ ॥
"लाधूराम" पीया बिन सूनी,
थाट आनन्द की बातड़ियाँ ॥ ४ ॥

भजन संख्या (४१) राग सोरठ सारंग, मलहार पद।

दर्शण दीना पाप सब छीना,
पल पल पुलकत प्रेम कली ॥ टेर ॥
मेघ मलार हुई उर अन्दर,
दुविधा दुर्मति भाग चली ॥ १ ॥
सारंग राग सुहावन लागे,
प्रेम मेघम में जाय रली ॥ २ ॥

मोहन मिल्यों शंस्य सब टूटो,
सुरत शब्द में जाय मिली ॥ ३ ॥
"लाधूराम" गुरू के शरणे,
पाई ज्ञान निज मोक्ष गली ॥ ४ ॥

भजन संख्या (४२) राग रेखता पद।

सिमर मन गुरू का चरना,
मिटे सब दुःख में फिरना ॥ टेर ॥
स्मरण कीयों सुख थावे, भव चक्कर में नहिं आवे।
लेवे जब सतगुरू का शरणा,
छूटे भव जनम मरणा ॥ १ ॥
सतगुरू सन्त पुकारा, तूँ मान वचन सत सारा।
कटे तब यम की फांसी,
हो सुख सागर का वासी ॥ २ ॥
भजन में सत्य मन लागे, भरम का ठीकरा भागे।
चढ्या जब नाम की घाटी,
निर्भय कर निश्चय वाटी ॥ ३ ॥
निर्भय नगर में जब आया, लगे नहिं जहां यम दाया।
कर अरस परस दीदारा,
मिल्या सत मोहन प्यारा ॥ ४ ॥

कही गुरू ब्रह्म रस वाणी, लखे कोई सन्त सुजाणी।
संत "लाधूराम" गुण गाया,
संत निर्भय अचल थाया ॥ ५ ॥

भजन संख्या (४३) राग रेखता पद।

पीया निज नाम का प्याला,
पीवत ही मैं भया मतवाला ॥ टेर ॥
प्रेम प्याला गुरू दीया, यतन कर शोध के लीया।
पीया में लगन सत लागी,
त्रिगुण ज्वाला सभी भागी ॥ १ ॥
ज्ञान उमंग यूँ आयो, घन बादल ज्यूँ वरसायो।
चहूँ दिश में डाल कर घेरा,
गगन मण्डल में दीया डेरा ॥२॥
चऊदा लोक में हरियाली, सींचे नित बाग को माली।
माली सत बाग से न्यारो,
अजर सत अमर दीदारो ॥ ३ ॥
सतगुरू मिल्या अविनाशी, दुविद्या दुर्मति दोष नाशी।
"लाधूराम" निर्भय गम गाई,
फकीरी अदल सहज से पाई ॥४॥

इति श्री लाधूराम कृत भजन सम्पूर्णम

❀ श्री हरि गुरू सच्चिदानन्दाय नमः ❀

अथ श्री गुरू महिमा को अंग प्रारंभ १
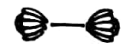
❀ दोहा छन्द ❀

देवन का सत देव है, गणपत गुरू दयाल।
बल बुद्धि दाता शिर धणी, कृपा करो कृपाल ॥ १ ॥
मम आशा पूरी करो, मैं हूँ आपका दास।
तुम दाता दुःख भँजना, आप सदा सुखराम ॥ २ ॥
अन्तर्यामी आप हो, चितवन पूरणहार।
शरण पड़े की लाज में, जल्दी करो संभार ॥ ३ ॥
आप संभारो शिष्य का, पूर्ण सब ही काज।
जैसे पूत कपूत की, रखे तात सत लाज ॥ ४ ॥

❀ सोरठा छन्द ❀

मैं अति दीन अनाथ, कर जोड़ूं विनती करूँ।
सतगुरू मेरे नाथ, नजर निहारो नाथजी ॥ ५ ॥
कर दृष्टि सत जोय, कृपा दास पर सत करो।
कारज मेरो होय, लाधूराम की अर्ज यह ॥ ६ ॥

❀ चौपाई छन्द ❀

सत गुरू सीधा शब्द सुणाया, शब्द विचार परम पद पाया।
सोहं नाम सुणाया पूरा, धारे जिज्ञासू कोईक शूरा ॥ ७ ॥
श्रवण सुणत राम धुन लागी, ममता मोह मन की सब भागी।
गुरू का बाला हरदम सोई, रमभ्र लखे गुरू मुख से जोई ॥ ८ ॥
ममता दूर भया मन सीधा, सोहं शब्द हृदय में बींधा।
मनवा मृग जगत में फिरता, गुरू गम पाय गही निज थिरता ॥९॥
थिरता गहन सुरत ठहराणी, गुरू मूर्ति उर अन्दर जाणी।
मूल कँवल दृढ आसन कीना, गणपति देव दर्श निज दीना ॥१०॥
उपस्थ कँवल ब्रह्माजी खेले, सृष्टी भार रंग बहु फेले।
रजो विस्तार करे विधनाना, सावित्री संग रास रचाना ॥११॥
नाभ कँवल नारायण बैठा, भरण पोषण कर जग में पैठा।
चिंटी कुँजर सर्व की सेवा, लक्ष्मीनारायण यही फल देवा ॥१२॥
शंकर ध्यान हृदय के माई, पार्वती संग रहत सदाई।
तमोगुण जाप अजाप सुहावा, सोहं सोहं हरदम गावा ॥ १३ ॥
कंठ कंवल सरस्वती धुन जागी, अग्र श्रेणी पर सहजे लागी।
बंक नाल का रस्ता कीना, सहजे गुरु गम स्मरण कीना ॥ १४ ॥
त्रिवेणी महल में तार लगाई, सुरती आतम माही मिलाई।
प्रेम तैल से ज्योतिजागी,सत गुरू शब्दअखण्ड लिव लागी ॥१५॥

बिजली चमके गगन घुराया, सहजे माग मुक्ति का पाया।
दशवें द्वार दर्श सत दीना, अजर अमर प्याला भर पीना ॥१६॥

सन्त समागम होवत भाई, कंवल पंखड़ी भेद बिलाई।
"गणेशराम" गुरू ज्ञान निधाना, मेरे मन का शंस्य भाना ॥१७॥

❋ दोहा छन्द ❋

जनम मरण व्यापे नहीं, निर्भय नगर सुख रूप।
"लाधूराम" निज को सदा, करत प्रणाम अनूप ॥ १८ ॥

सत गुरू स्वामी ब्रह्म है, ज्ञानी विश्वावीस।
"लाधूराम" गुरू चरण में, सदा हमारो शीश ॥ १६ ॥

❋ त्रिभंगी छन्द ❋

मैं करत पुकारी, अरज हमारी।
गुरू मुरारी, सुण लीजो ॥
भव सिन्धु अपारी, कठिण करारी।
है भय भारी, सो हर दीजो ॥
गुरू पार उत्तारा, भवजल तारा।
दीया सहारा, भ्रम भागा ॥
सो लाधूरामा, सिमरे श्यामा।
उत्तम सुकामा, रवि जागा ॥२०॥

अथ छूटकर छन्द वाणी उपदेश

❋ इन्दव छन्द ❋

महंत मुनिजब यज्ञ रच्यो तब, देव नदी तट सार बखाना।
जल के हेतु गई इक बालिका, बोझ उठाय सकी नहीं नाना ॥
ताप रहे मुनि आदि कवि तहँ, देख कन्या हित वाक्य सुजाना।
राम को नाम हृदय धरि पूर्ण, बोझ हटे सुख पाय प्रमाना ॥१॥

ले जल कुम्भ सु भवन गई जब, माता को देख आवाज सुणाई।
जल को बोझ सह्यो नहीं जावत, बेग उठो नहीं गागर जाई ॥
पाण्डे देख विचार कीयो जब, वाक्य सुणा तब शीश धुनाई।
नाम प्रताप मुनि बल प्रगट, लाधूहीराम सुनावत गाई ॥ २ ॥

❋ कुण्डलिया छन्द ❋

पर्वत सुत पधराय के, वन सुत तले बिछाय।
हाड मांस वाके नहीं, कहै वाम पद गाय ॥
कहै वाम पद गाय, बिना स्वास ही फतके।
पुरूष चरण आगे धरे, धाम शीत नहीं अटके ॥
"लाधूराम" कहै सब सुणो, नीके १अर्थ कर सुरत।
समय रति चूके नहीं, एसो है प्रण वरत ॥ ३ ॥

रेलगाड़ी इञ्जन के पीछे चलती है।

विश्वासी बातों करे, नाम बड़ों का लेव ।
पुरुष एकत्रित होय जो, कबहूँ न पावे भेव ॥
कबहूँ न पावे भेव, जहर में जहर ही भाखे ।
अंतः गरल को गरल है, अमृत कैसे चाखे ॥
"लाधूराम साची कहै, सब सन्तन को सेव ।
विश्वासी बातों करे, नाम बड़ों को लेव ॥४॥

❀ दोहा छन्द ❀

दूर देश की खबर ले, ज्यामे शक्ति अपार ।
गरूड़ हंस पत्ती नहीं, पण्डित १ करो विचार ॥ ५ ॥
२ ३ ४ ५ ६ ७
जल सुत सुत वाहन वही, सिंधु सुता सुत जोय ।
तारिपु ४ के जाने बिना, भलो कहां ते होय ॥ ६ ॥
३ विधि ४ वाहन की छोड़के, बना वायस ८ का दास ।
"लाधूराम कैसे कटे, अनंत जनम की फास ॥ ७ ॥
कीये विचार पहुँचे नहीं. ग्राम ९ बात कई आख ।
गुरू कृपा निज कर्म ते, साधू जन की साख ॥ ८ ॥

इति श्री छूटकर छन्दवाणी सम्पूर्णम् ।

१ हवाईजहाज, २ कमल, ३ ब्रह्मा, ४ हंस, ५ समुद्र, ६ सीपी, ७ मोती, ८ काग, ९ साँच शिक्षा ।

❀ श्री हरि गुरू सच्चिदानन्दाय नमः ❀

श्री श्री १०८ श्री स्वामी गणेशरामजी महाराज के परम शिष्य

श्री स्वामी फरसरामजी महाराज कृत भजन प्रारंभ !

भजन संख्या (१) राग बधावा पद ।

आज म्हारे आगणे सतगुरू आया पावणा ।
ज्ञान गंगा नीर निर्मल, जामे निश दिन न्हावणा ॥ टेर ॥
सतगुरू आया दर्शण पाया. लागे रूप सुहावणा ।
मैं बलिहारी श्याम की, मेरे जीवों बंध छुड़ावणा ॥ १ ॥
ज्ञान लाया ध्यान लाया, जुगती योग बतावणा ।
जीवां कारण जहाज लाया, पल में पार उतारणा ॥ २ ॥
अवतार धारे आवणा, गुरू भूमि भार मिटावणा ।
असुर मारण सन्त तारण, भक्ती विरद निभावणा ॥ ३ ॥
प्रभूजी का आवणा, मेरे हर्ष बधावणा ।
चौफेर हुआ चाँनणा, म्हाने मन्दिर लागे मनभावणा ॥ ४ ॥
सतगुरू आया आनन्द थाया, कृपा छपर छावणा ।
महर कर गुरू वर्षा करि के, तन की तप्त बुझावणा ॥ ५ ॥

"फरस" के घर आवणा, गुरू गणेश प्याला पावणा।
मैं चरण शरणे आपके, औगुण सभी विसारणा ॥ ६ ॥

भजन संख्या (२) राग देश बधावा धनाश्री पद।

आज गुरू सन्त जन आयाए।

पूर्व भाग उदय भया मेरा, दर्शन पाया ए ॥ टेर ॥

महर करी गुरू मो पर मालिक, चरण धरवाया ए।
अपणा जाण जगत से तारण, बांह संभाया ए ॥ १ ॥
हरिकर हेत महर के सागर, सुख सिन्धु बताया ए।
शोभा कही ना जाय परम गुरू, पार न थाया ए ॥ २ ॥
शब्द सुणाय सन्देह मिटाया, आप्प लखाया ए।
आनन्द रूप उदय उर थाया, आतम धन पायाए ॥ ३ ॥
"गणेशराम" गुरू मेटिया, भव भ्रम भगाया ए।
"फरसराम" परम पद पाया, संशय मिटाया ए ॥ ४ ॥

भजन संख्या (३) राग सोरठ पद।

फकीरी! फिकर न करणा कोय।

भूत भविष्य वर्तमान में, होनी होय सो होय ॥ टेर ॥

बेफिकरा सो फूल फकीरी, सदा शान्ति घर जोय।
धीरज धारण मारण ममता, जीवन मुक्ता सोय ॥ १ ॥

निराधार निश्चय निरवाणा, अज्ञानन्द पद पोय।
सब के माहीं सभी ते न्यारा, साक्षी जाणो गोय ॥ २ ॥
इन्द्रिय परे सुषोप्ति सुन में, रहै सहज घर सोय।
तुरिय चेतन जाण यथार्थ, दुर्मति लेश न ढोय ॥ ३ ॥
क्या कुटिया क्या जंगल जिनके, आतम एक निरभोय।
सदा मतवारा डिगे ना डोले, अमर फकीरी निरमोय ॥ ४ ॥
मान मना यह मौज फकीरी, मैं समझावूँ तोय।
"फरसराम" पूर्ण पद पाया, फिकर फेंक अनुभोय ॥ ५ ॥

भजन संख्या (४) राग सोरठ पद।

फकीरी! निशदिन धरणा धीर।

रहणा ज्ञान गरक के मांही, पीरन हँदा पीर ॥ टेर ॥

दिल दरियाव अगम की लहरां, शान्ति रूप सुधीर।
अनंत अपार ठंडा गुण गहरा, निपजे मुक्ता हीर ॥ १ ॥
अमृत वांण बोल मुख वाणी, ज्यूं गंगाजल नीर।
अन्तर बाहिर मल मूल मिटावे, निर्मल होय शरीर ॥ २ ॥
सदा सुख रूप सहज घर आसण, आतम ज्ञान गंभीर।
मौज फकीरी जीवन मुक्ता, धन धन सोई फकीर ॥ ३ ॥
अगम निगम ताका यश गावे, तुलसीदास कबीर।
परम पियारा दर्श योगी का, तेज बड़ा तकदीर ॥ ४ ॥

गुरू "गणेश" गुणों के सागर, बड़ भागी मम वीर।
"फरसराम" धीर पद धारूँ, अमर लोक जागीर॥ ५॥

भजन संख्या (५) राग चौपाई, कानड़ा पद।

साचा रस्ता गुरु गम पाया, निश्चय देख पेख मन लाया॥ टेर॥
त्रिगुण प्रपंच फन्द जग नाना, भ्रमण चौरासी पन्थ में माना।
गुरु बिन गति होय नही प्यारा, साचानिर्णय कीया विचारा॥१॥
और नाना विद्या विध बाणी, यामें जीवन मुक्त की हाणी।
नहीं सार सत रूप को खोजी, कैसे शब्द पावे निरभोजी॥ २॥
सुणी श्रवण चित संत की बाणी, निर्मल रूप महां गंगपाणी।
ताप पाप गति मिटी जो तन की, आपस्वरूप गति हुई मनकी॥३॥
अगम अगुसत निगम जो बाणी, परा पार सत सो परवाणी।
यूँ ही मिल्या ब्रह्म सो निरवाणी, सोई हम निश्चय कर जाणी॥४॥
सन्त बाणी निरवाणी जाणी, संत की संत मति गति पहिचाणी।
"पारस" पार पर निर्भय लीना, अमृतसार रस बाणी पीना॥५॥

भजन संख्या (६) राग रेखता पद गजल।

वेद का भेद कोई जाणे, बहुरि भवसिंधु न आवे॥ टेर॥
वेद में ब्रह्म ज्ञान की बातों, मिटे अज्ञान मोह की रातों।
मिले निज रूप सत अपणा,
स्मरण नित आपका जपणा॥१॥

वेद की चार हैं बाणी,
ब्रह्म विद्या महात्म जाणी।
चार को कीया इक ठाणी,
आत्मा वेद दरशाणी॥ २॥
तत्वंमसि – अहंब्रह्म असंगी,
प्रज्ञानमानन्द संगी।
अयंमात्म ब्रह्म मैंहूँ,
एकता जीव शीव दैहूँ॥ ३॥
इसी विध एकता कर जाणी,
सोई सत पार परवाणी।
नितो नित नूर निरवाणी,
मुक्ति तो भरे वहां पाणी॥ ४॥
वेद ब्रह्म एक कर लीना,
वेद विध कर आत्म चीना।
"पारस" पर ब्रह्मरस पीना,
मधुर मैं हूँ झीने से झीना॥ ५॥

इति श्री फरसरामजी महाराज कृत भजन सम्पूर्णम्।

॥ श्री हरि परमात्मनै नमः ॥

श्री स्वामी लाधूरामजी महाराज के परम शिष्य

साधु खेतारामजी महाराज कृत वाणी प्रारंभ।

भजन संख्या (१) राग कल्याण पद।

आरती! दीनानाथ की कीजे, जासे पाय परमानन्द पीजे ॥ टेर ॥
मैं हूँ अनाथ अरज सुण लीजे, शब्दसुणाय शांति उर दीजे ॥१॥
कृपा करो मोही दर्शन दीजे, अनन्त जनम का पाप कटीजे ॥२॥
महर मया मय हाथ धरीजे, अवगुण मेरा माफ करीजे ॥३॥
"लाधूराम" सतगुरु परसीजे, खेताराम को मुक्ति चहीजे ॥४॥

भजन संख्या (२) राग कल्याण पद।

आरती! सतगुरु सन्त समाई, करो कृपा नित आप सुहाई ॥टेर॥
सतगुरू वचन हृदय धरवाई, दर्शण देकर पार पठाई ॥ १ ॥
ज्ञान ध्यान गम गुरू से पाई, शरणे जाय भया सुखदाई ॥ २ ॥
हरदम स्मरण हरि को गाई, स्वासो स्वास निजानंद थाई ॥ ३ ॥
"लाधूराम" गुरू कृपा दाई, खेताराम निज आप अचाई ॥ ४ ॥

भजन संख्या (३) राग नट कल्याण पद संगीत।

मैं हूँ सतगुरु चरण की चेरी, मिट गई मनकी भव सेफेरी ॥ टेर ॥
सकल जगत से वृति तोड़ी, भ्रम ठीकरा निर्भय फोड़ी।
सत गुरु स्वामी दासी तेरी ॥ १ ॥

भवसागर दुःख भव है भारी, तोड़ जगत से मूरख यारी।
चेत चेत मन क्यूँ कर देरी ॥ २ ॥
राम नाम धुन मेरे लागी, दुविद्या दुर्मति सब ही भागी।
नाश भई सब कर्मकी सेरी ॥ ३ ॥
"लाधूराम" सतगुरु की दासी, कर कृपा काटी भव फांसी।
"खेताराम" निर्भय धुन हेरी ॥ ४ ॥

भजन संख्या (४) राग देश बधावा पद।

परम गुरु परखण आया ए, आया ए दर्शण पाया ए ॥ टेर ॥
सतगुरु स्वामी कृपा कीनी, निर्मल नाम सुनाया ए ॥ १ ॥
दे उपदेश कीया भव पारा, जनम सफल करवाया ए ॥ २ ॥
गुरु की रमझ लखे शिष्य साचा, अचल अपार अथाया ए ॥३॥
"लाधूराम" गुरु समर्थ मिलीया, खेताराम पद पाया ए ॥ ४ ॥

भजन संख्या (५) राग बधावा पद।

गुरुजी तेरी शरण आया ए, आया ए आनन्द थाया ए ॥ टेर ॥
आज सभी मिल मंगल गावो, सतगुरु आंगण आया ए ॥ १ ॥
प्रेम की प्रीत लगी उर अन्दर, गुरु से नेह लगाया ए ॥ २ ॥
सत गुरु शब्द की प्यासी सुरता, संत मिल्यो सुख थाया ए ॥३॥
"लाधूराम" गुरु शरण में जाई, खेताराम ब्रह्म पाया ए ॥ ४ ॥

भजन संख्या (६) राग झंझोटी पद।

गुरुजी ! मुझे करदो पेली तीर ॥ टेर ॥
यह संसार अति दुःख सागर, गुरुजी बन्धावो धीर ॥ १ ॥
नाम जहाज पर आण चढावो, काटो भव की पीर ॥ २ ॥
सन्त दयालू पर उपकारी, निर्भय सन्त फकीर ॥ ३ ॥
"खेताराम" पर कृपा कीजो, काटो भ्रम भवसीर ॥ ४ ॥

❁ दोहा छन्द ❁

सतगुरू के सन्मुख सदा, काटो कुल भव काण।
"खेताराम" सत संग कर, कब हूँ न होवत हाण ॥ १ ॥
संतन से मुख मोड़ के, जग से राखे नेह।
"खेताराम" उस जीव की, यम ले जासी देह ॥ २ ॥
सत संगत में आयके, बात चलावे और।
"खेताराम" उस जीव को, आगे नाही ठौर ॥ ३ ॥

❁ सोरठा छन्द ❁

मैं दुर्बल कंगाल, आन आसरो कुछ नहीं।
आप करो संभाल, कृपा करो गुरू शिर धणी ॥ ४ ॥

॥ इति श्री खेतारामजी महाराज कृत भजन समाप्त ॥

भक्ति, ज्ञान, वैराग्य बोद्ध आदि नीति साहित्य संगीत
मय पद्यालंकारों से भुषित।

श्री आदर्श उत्तम गुरुद्वार (पुस्तक विभाग)

साहित्य भण्डार, सम्पादन कक्ष के द्वारा अभूत पूर्व पुस्तकों का प्रकाशन होगया है। जन धन जीवन कल्याणार्थ धार्मिक उत्सव पर्व के उपलक्ष में शीघ्र मंगवाकर पाठक गण लाभ उठावें।

(१) श्री उत्तमराम-भजन-प्रकाश। मूल्य केवल मात्र २)

नाना रागरागनियों से भरपूर ३०० भजन व दोहादि नाना छन्दोयुत ग्लेज पृष्ट संख्या २५६, आत्म ज्ञान संगीत मय।

(२) श्री अवधूत-ज्ञान-चिन्तामणि। कीमत लागत मात्र ॥)

सर्वालङ्कारो से परिपूरित, १६० छन्द व ५० भजन पृष्ठ संख्या ६० में, रोचक-यथार्थ साहित्य सङ्गम।

(३) श्री रामज्ञान वैदान्तसार ब्रह्मण्डवृक्ष पट (सृष्टी मूल)

जड़-चेतन की स्पष्टोक्ति, केवल मात्र मूल्य २०) रुपया,

(४) श्री शान्ति-बोध-प्रकाश।

सर्वालंकारों से भरपूर, डाक खर्च भेजकर मुफ्त मंगवाईये।

साहित्य भण्डार की सेवा में पुस्तकें प्रकाशनार्थ उपलब्ध है।

(१) श्री रामप्रकाश-भजन-प्रभाकर।
(२) श्री रामपद्धतिविलास (भजनविकासमाला) दो भागों में।
(३) श्री त्रिकाल रहस्य–अर्थात्–विश्व उपक्रमोऽपसंहार।

पुस्तकें मिलने का पताः– **श्री उत्तम आश्रम (रामद्वारा)**

नागौरीद्वार, कागारोड़, उत्तमचौक, जोधपुर (राज०)